

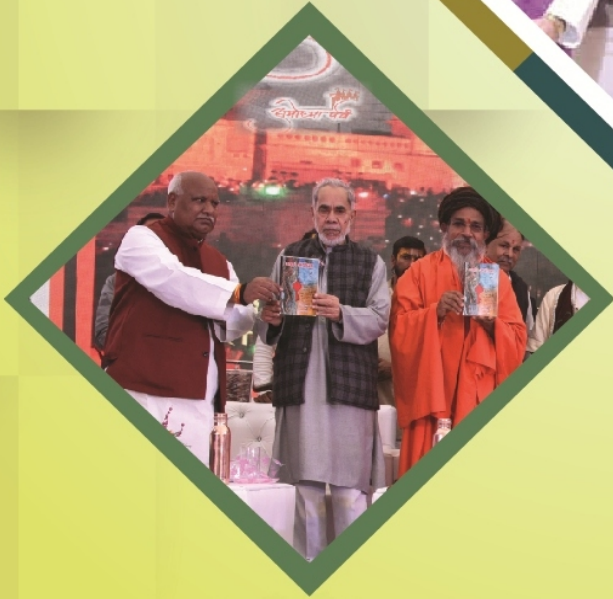
विहंगम

जनवरी - फरवरी 2020

इ.ग.रा.क. केन्द्र की पत्रिका

Vihangama

The IGNCA Newsletter



इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS



श्री लक्ष्मीनारायण भाला द्वारा लिखित पुस्तक 'हमारा संविधान: भाव एवं रेखांकन' के परिचर्चा सत्र में वक्तव्य देते हुये
न्यास अध्यक्ष श्री रामबहादुर राय तथा अतिथिगण



International Mother Language Day : Hon'ble Vice President of India Sh. Venkaiah Naidu with Hon'ble HRD Minister Sh. Ramesh Pokhriyal 'Nishank'; Hon'ble Minister of State (I/c) Culture & Tourism, Sh. Prahlad Singh Patel; Hon'ble Minister of State, Ministry of HRD Sh. Sanjay Shamrao Dhotre



A Workshop cum Book Discussion on "Health and Wellbeing in Late Life" by Dr. Prasun Chatterjee, Department of Geriatrics, AIIMS, New Delhi. Shri O.P. Kohli, former Governor, Gujarat; Shri Ram Bahadur Rai, President, IGNCATrust and others



Dr. Sachchidanand Joshi, MS, IGNCA felicitating the speaker Prof. Vasudha Narayanan, Department of Religion and Director, Center for the study of Hindu Traditions (ChiTra) University of Florida



Five day International workshop on "Textiles on Storage" inaugurated by her excellency Dr. Brigitte Öppinger-Walchshofer, Ambassador of Austria to India with Member Secretary, IGNCATrust and HoD, Conservation



The eminent film director Syed Muzaffar Ali, His excellency Dr. Ali Chegani, Ambassador of Iran in India and Dr. Sachchidanand Joshi, MS, IGNCATrust during the Iranian Arts Exhibition at IGNCATrust

मुखपृष्ठ – इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के विभिन्न कार्यक्रमों से संग्रहित



CONTENTS

550वाँ श्री गुरु नानक देव जी
जन्म-शताब्दी स्मरणोत्सव
(2019-2020)

2 डॉ. अभिजित् दीक्षित

International Mother
Language Day Celebration

5 Prof. Ramesh C. Gaur

Annual Day Celebration of
Kala Nidhi Division

7 Dr. Shilpi Roy

Angkor Wat: Art,
Architecture and Agency

9 Sumit Dey

International Workshop on
Textiles on Storage

10 Simran Sangal

2nd International
Workshop on Language
Documentation and Digital
Archiving

11 Dr. Shobhana Chelliah

Celebrated Painters &
Photographers on Bengal
and Santiniketan

12 Dr. Shilpi Roy

Events At Glance

14

Amritasya Putraha: Vedic
Re-engineering Conclave
2020

16 Sumit Dey

Lecture : What does
Pampamahatmya reveal on
the cultural history of
Hampi?

17 Shivani Gupta

हलमा परम्परा : जाग जो म्हारे
हंगडा भाई, कण निद्रा मा होता

18 अभय मिश्र

Programs at Regional
Centre Puducherry, IGNC

20 Dr. Gopal Jayram

Lecture on Manuscripts
Treasure of India

22 Dr. Ayswaria Warier

Programs at Regional
Centre Bengaluru, IGNC

23 Aparna Sharma

क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी,
आईजीएनसीए के कार्यक्रम

24 डॉ. रजनीकान्त त्रिपाठी एवं
त्रिलोचन प्रधान

Programs at Regional
Centre Ranchi, IGNC

25 Aparna Jha

Programs at Regional
Centre Goa, IGNC

26 Dr. Aruna Gajbhiye

Programs at Regional
Centre Thrissur, IGNC

27 Dr. Sajith E. N.

Events/Book Release
organized by Kala Nidhi
Division, IGNC

28

Chief Editor:

Dr. Sachchidanand Joshi

Editor:

A. K. Sinha

Editorial Team:

Dr. Abhijit Dixit, Dr. Ranabir Singh Sapam, Dr. Shilpi Roy,
Ranjana Bisht, Shruti Awasthi, Neeraj Kumar & Sunita Govind

Cover Design & Layout:

Karan Singh

The opinions expressed in the magazine are those of the authors/interviewers
and IGNC does not necessarily subscribe to them.

Photo Credit:

All photographs are from the IGNC
Archives / Photography Unit unless specified
otherwise.

Print:

Pohoja Print Solutions Pvt. Ltd.

420, Patpatganj Industrial Area, Delhi - 110092

A report was published titled 'A report on three-days National Seminar on Bharatiya Shilp
and Architecture' in Vihangama (Page No. 11, Nov-Dec. 2019 issue) actually presented by
Ms. Simran Kaur, Project Associate, Bharat Vidya Prayojana but by mistake the reporter
name was given as Smt. Ayswaria Warier, RD, RCV, IGNC in the Newsletter.



550वाँ श्री गुरु नानक देव जी जन्म-शताब्दी स्मरणोत्सव (2019-2020)

डॉ. अभिजित् दीक्षित

अनुसन्धान अधिकारी, कल्चरल इन्फोर्मेटिक लैब

संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार के निर्देशन में 550वाँ श्री गुरु नानक देव जी जन्म शताब्दी स्मरणोत्सव (2019-2020) के अन्तर्गत आईजीएनसीए द्वारा निम्न पाँच प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है – समागम, भाषण, कवि दरबार, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, प्रदर्शनी तथा पुस्तक प्रकाशन। इस स्मरणोत्सव कार्यक्रम के मुख्य समन्वयक, संरक्षण प्रभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अचल पण्ड्या हैं। इस शृंखला में जनवरी-फरवरी माह में देश के विभिन्न शहरों में श्री गुरु नानक देव जी से सम्बन्धित निम्न कार्यक्रमों का आयोजन हुआ –

समागम –

बीकानेर, राजस्थान – आदर्श शिक्षण संस्थान, बीकानेर, राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 19 जनवरी 2020 को पशु-चिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय में इस समागम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि वरिष्ठ समाजसेवी एवं विचारक श्री कैलाश भसीन; विशिष्ट अतिथि प्रख्यात शिक्षाविद् श्री सुखजिंदर सिंह ऋषि; श्री गुरुबचन सिंह मोखा, अ.भा. कार्यकारी अध्यक्ष, सिख संगत दिल्ली एवं मुख्य वक्ता के रूप में श्री गुरुचरण सिंह गिल, अध्यक्ष, राष्ट्रीय सिख संगत, दिल्ली उपस्थित थे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री पी.एस. वोहरा, सीईओ, बाफना अकादमी, बीकानेर ने की थी। इन सभी वक्ताओं ने श्री गुरु नानक देव जी के जीवन तथा शिक्षाओं पर केन्द्रित विभिन्न पहलुओं पर व्यापक सन्देश दिये। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगीत 'वन्दे मातरम्' की प्रस्तुति के साथ किया गया। कार्यक्रम में बीकानेर के पूर्व महापौर एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं, शिक्षाविदों, पेशेवरों, अनुसन्धानकर्ताओं विद्वानों, छात्रों तथा आम जनता ने भाग लिया।

राँची, झारखण्ड – राँची क्षेत्रीय कार्यालय, आईजीएनसीए तथा राँची विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 24 जनवरी, 2020 को “श्री गुरु नानक देव जी की जीवनी तथा शिक्षायें” विषय पर समागम आयोजित किया गया। समागम को दो चरणों में विभाजित किया गया था जिसके प्रथम चरण में पीजीडीटीएसी छात्रों द्वारा विकसित एक कला प्रदर्शनी के साथ-साथ, स्कूली बच्चों के लिये श्री गुरु नानक जी के शाश्वत मूल्यों और शिक्षाओं से सम्बन्धित विभिन्न गतिविधियाँ जैसे – चित्रकला प्रतियोगिता, कहानी, क्विज तथा अन्य प्रतियोगितायें थीं। इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों में गुरु नानक देव स्कूल तथा राँची के एल.ई.बी.बी. हाईस्कूल के 200 से अधिक छात्रों ने सहभागिता ली।

महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड, द्रौपदी मुर्मू ने कार्यक्रम के द्वितीय चरण में समागम की अध्यक्षता की। सभा में उपस्थित अन्य गणमान्य वक्ता – प्रो. एस.एन. मुंडा, कुलपति, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, राँची विश्वविद्यालय के

कुलपति तथा श्री गुरुचरण गिल, अध्यक्ष राष्ट्रीय सिख संगत थे। कार्यक्रम का प्रारम्भ श्री एच.बी. सिंह, पूर्व प्रोफेसर, राँची विश्वविद्यालय द्वारा मोहक अरदास (गुरुमुखी) से हुआ। डॉ. अजय कुमार मिश्रा, क्षेत्रीय निदेशक, राँची क्षेत्रीय कार्यालय ने उद्घाटन भाषण में अतिथियों का स्वागत किया। मुख्यवक्ता श्री गिल ने अपने वक्तव्य में श्री गुरु नानक जी की समतावादी सामाजिक विचारधारा पर जोर दिया, जो बिना किसी जाति और लिंग भेद के सभी वर्ग की समानता पर केन्द्रित है।



महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड, द्रौपदी मुर्मू, क्षेत्रीय कार्यालय आईजीएनसीए, राँची द्वारा आयोजित समागम कार्यक्रम में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुये

महामहिम राज्यपाल ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में अन्तःसद्भाव की सामाजिक आवश्यकता एवं बड़े पैमाने पर मानवता की भलाई के लिये निरन्तर सम्ववाद के महत्त्व पर विशेष प्रकाश डाला। समागम में पीजीडीटीएसी छात्रों द्वारा निर्मित कला-शिल्प कार्यों पर प्रदर्शनी आयोजित की गयी जिसमें आदिवासी महिला, विभिन्न परिदृश्यों, गोंडकला, सोहराई और कोहबर कला को प्रदर्शित करती हुई कलाकृतियाँ, फूल, गुलदस्ते और अन्य सजावटी सामान प्रदर्शित किये गये। समागम का समापन गुरबानी और सबद कीर्तन के साथ हुआ जो सिख संगत द्वारा प्रस्तुत किया गया था। प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। इस कार्यक्रम में केन्द्र के पीजीडीटीएसी के छात्रों ने प्रदर्शनी के निष्पादन एवं नियोजन में सक्रिय रूप से भाग लिया।

जोधपुर (राजस्थान) – प्रबन्ध समिति आदर्श विद्या मन्दिर, जोधपुर के सहयोग से दिनांक 02 फरवरी 2020 को समागम का

आयोजन कमला नेहरू नगर स्थित आदर्श विद्यामंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय, केशव परिसर में किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ गुरुग्रंथ साहिब के प्रकाश एवं कीर्तन से किया गया। राष्ट्रीय सिख संगत के सहसंगठन मंत्री श्री जसवीर सिंह ने कार्यक्रम की भूमिका रखी। विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राजस्थान क्षेत्र के क्षेत्र-कार्यवाह श्री हनुमान सिंह ने कहा कि वाणिजा एवं सबद आज भी प्रासंगिक है। मुख्य वक्ता राष्ट्रीय सिख संगत के अध्यक्ष श्री गुरुचरणसिंह गिल ने गुरुनानक के आदर्शों पर चलकर जीवन में कुरीतियों से दूर रहने का आह्वान किया। गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा के चेयरमैन श्री हरजीत सिंह भूटानी ने गुरुनानक देव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर जोधपुर सिन्धी तथा पंजाबी समाज के मुख्य अधिकारीगण सर्वश्री मिश्रीलाल प्रजापति, प्रीतपाल सिंह, कुलदीप सिंह सलूजा, महेंद्र कुमार दवे, सुनील तलवार, राम तोलानी, संजीव सचदेवा, निर्मल गहलोत, पारसमल जैन, ललित शर्मा, हरदयाल वर्मा आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री अशोक कुमार सोनी ने किया।



समागम सभा को सम्बोधित करते हुये मुख्यवक्ता श्री गुरुचरण सिंह गिल, जोधपुर, राजस्थान

पानीपत (हरियाणा) – शिवाजी स्मारक समिति, पानीपत के सहयोग से दिनांक 08 फरवरी 2020 को सभागार, आर्य पीजी कॉलेज, पानीपत में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सुश्री अवनीत कौर, महापौर, पानीपत ने कहा कि गुरुनानक देव का जीवन त्याग और सहयोग की भावना से भरा हुआ है। लोगों को उनकी जीवनी तथा कार्यों से प्रेरणा लेकर स्वयं और समाज को तरक्की के पथ पर ले जाना होगा। अन्य वक्ताओं के रूप में प्रो. मंजीत सिंह डीयू के विभागाध्यक्ष, पंजाबी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी के प्रो. सुरेंद्र देवेश्वर, राष्ट्रीय सिख संगत के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री देवेन्द्र सिंह गुजराल तथा राष्ट्रीय सिख संगत के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री श्री जसबीर सिंह ने गुरुनानक देव के जीवन के विविध पक्षों पर प्रकाश डालते हुये उनके आदर्शों के लिये प्रेरित किया साथ ही गुरुनानक देव के जीवन पर स्वरचित कविताओं से उनकी शिक्षाओं और जीवन कार्यों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में सांसद श्री संजय भाटिया, शिवाजी स्मारक समिति के अध्यक्ष श्री अनिल मित्तल तथा श्री भारत भूषण शर्मा, उपसचिव (शैक्षणिक) आईजीएनसीए भी उपस्थित रहे।



आर्य पीजी कॉलेज, पानीपत में आयोजित समागम कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सुश्री अवनीत कौर, महापौर, व्याख्यान देते हुये

प्रयागराज (उत्तरप्रदेश) – श्री गुरु नानक सेवा सोसायटी, प्रयागराज, (उ.प्र.) के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 23 फरवरी 2020 को डी. ए. वी. इण्टर कॉलेज मीरापुर, प्रयागराज, उत्तरप्रदेश में भव्य समागम का आयोजन किया गया। समागम का शुभारम्भ भाई जसप्रीत सिंह तथा अन्य सहयोगियों के कीर्तन द्वारा हुआ। अपराह्न में सिखधर्म के विद्वान् श्री गुरुचरण सिंह गिल, श्री देवेन्द्र सिंह निरोल, संत बाबा साधू सिंह, श्री बलजीत सिंह संधू, श्री विजेंद्र सिंह तथा श्री नरेंद्र सिंह ग्रोवर आदि विभिन्न वक्ताओं ने श्री गुरु नानक देव जी के जीवन और शिक्षाओं से सम्बन्धित विविध विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किये साथ ही इसमें श्रीमती रीता बहुगुणा जोशी, सांसद, प्रयागराज ने भी समागम की प्रशंसा में अपने विचार प्रस्तुत किये। केन्द्र से समन्वयन और मार्गदर्शन हेतु श्री भारत भूषण शर्मा, उपसचिव (शैक्षणिक), आईजीएनसीए समागम में उपस्थित रहे। सायंकालीन कार्यक्रमों में श्री गुरु नानक देव जी के जीवन पर आधारित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ समागम का समापन हुआ।

व्याख्यान –

चंडीगढ़ – पंजाबी विभाग, शासकीय पोस्ट ग्रेजुएट कन्या महाविद्यालय, सेक्टर-11, चंडीगढ़ के सहयोग से दिनांक 24 फरवरी 2020 को व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. सुरिन्दर कुमार देवेश्वर, डॉ. लखवीर लीजिया, तथा एस. गुरुबचन सिंह मोखा अतिथि वक्ता थे। पंजाबी की प्रमुख विभागाध्यक्ष डॉ. देविन्दरजीत कौर ने अतिथियों का स्वागत किया तथा प्रख्यात शिक्षाविद् डॉ. सुरिन्दर कुमार देवेश्वर ने सभा को संबोधित करते हुए गुरुबाणी को समझने के लिए छायावाद के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने समकालीन दुनिया में गुरु नानक की शिक्षाओं की प्रासंगिकता पर जोर दिया और श्रोताओं से आग्रह किया कि वे शांत

जीवन जीने के लिए गुरु की शिक्षाओं का पालन करें। केंद्रीय विश्वविद्यालय, भटिण्डा के सहायक प्रोफेसर डॉ. लखवीर लीजिया ने सन्तपरम्परा और गुरु नानक बानी विषय पर अपने विचार साझा किये। मुख्य वक्ता एस. गुरबचन सिंह ने गुरु नानक देव जी के जीवन और यात्रा के कई विशिष्ट पहलुओं को स्पष्ट किया और दैनिक जीवन से दृष्टांत देकर गुरुकुल की अवधारणा को समझाया। प्राचार्या प्रो. अनीता कौशल ने बताया कि गुरु का शिक्षण आधुनिक दुनिया में अभी भी प्रासंगिक है और सभी धर्मों में पूजनीय है। कार्यक्रम में एस. जसबीर सिंह सामाजिक कार्यकर्ता श्री कंवर इकबाल, डीन तथा डॉ अनीता खोसला, उपप्राचार्या उपस्थित थे। कार्यक्रम में अन्य कॉलेज के संकाय सदस्यों के साथ 700 से अधिक छात्रों ने भाग लिया।

सुखानन्द (मोगा) – श्री गुरु नानक देव जी के जीवन और शिक्षाओं पर विशेष व्याख्यान का आयोजन, 28 फरवरी 2020 को सुखानन्द (मोगा) में संत बाबा भगवान सिंह मेमोरियल कन्या महाविद्यालय के सहयोग से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम शब्द गायन एवं पंजाब विश्वविद्यालय के कुलगीत से प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. सुखविंदर कौर द्वारा स्वागत के उपरान्त उपप्राचार्या श्रीमती गुरजीत कौर ने मंच का संचालन करते हुए सभी अतिथियों को छात्रों से परिचित कराया। मुख्य अतिथि डॉ. रवि रविंदर, एसोसिएट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय ने यह वक्तव्य दिया कि नानक बानी का 'मूल मन्त्र' न केवल एक ईश्वर का आध्यात्मिक अध्ययन है, अपितु यह भौतिक जगत् के सभी पहलुओं से भी जुड़ा हुआ है। विशिष्ट अतिथि श्री गुरचरण सिंह, अध्यक्ष, राष्ट्रीय सिख संगत, नई दिल्ली ने अपने संबोधन में बताया कि एक व्यक्ति जो बानी को पढ़ता है वह कैसे अमीर और गरीब का भेद मिटा सकता है। अन्त में सुश्री गुरमीत कौर, सहायक आचार्य, संगीत विभाग ने गुरु नानक देव जी पर अपनी कविता प्रस्तुत की। अन्य अतिथियों में सिख विद्वान् और सामाजिक कार्यकर्ता एस. जसवीर सिंह श्री तरसेम सिंह, जिला प्रबंधक एवं अध्यक्ष, राष्ट्रीय सिख संगत, भटिण्डा; श्री जतिंदरपाल, महासचिव; श्री परमिन्दर सिंह सिद्धू, पूर्व सरपंच; श्री सुखानंद तथा श्री नरेन्द्रपाल उपस्थित थे।

श्री मुक्तसर साहिब, बादल – दशमेश गर्ल्स कॉलेज, बादल के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 29 अक्टूबर, 2020 को श्री मुक्तसर साहिब, बादल में व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता श्री गुरचरण सिंह गिल, जयपुर तथा विशिष्ट वक्ता डॉ. रवि रविन्दर कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ. लखवीर लीजिया, सहायक प्रोफेसर, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, भटिण्डा व्याख्यान में उपस्थित थे। कार्यक्रम का प्रारम्भ गुरु नानक देव जी के शब्द कीर्तन पाठ से हुआ। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एस.एस. संघ ने वक्ताओं का स्वागत करते हुये गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं की महानता को परिभाषित किया। सुश्री रमन सिद्धू, सहायक प्राध्यापक (अंग्रेजी) ने व्याख्यान का संचालन किया। डॉ. रविंदर कुमार ने सरल भाषा में 'वर्तमान में श्री गुरु नानक देव जी के दर्शन की प्रासंगिकता' विषय पर व्याख्यान देते हुये कहा कि गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं के समृद्ध भंडार ने दर्शकों के लिये एक अनुस्मारक के रूप में कार्य किया है। डॉ. लीजिया ने गुरु की गहन शिक्षाओं की सार्वभौमिक प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।



मुख्य वक्ता श्री गुरचरण सिंह गिल, अध्यक्ष, राष्ट्रीय सिख संगत, नई दिल्ली वक्तव्य देते हुये

मुख्य वक्ता श्री गिल ने जगद्गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं की बदलती क्षमता पर जोर दिया। इस अवसर पर महाविद्यालय एम.ए. राजनीति विज्ञान की छात्रा सुश्री देविन्दर कौर ने स्वरचित कविता 'अपना मूल पछान' का पाठ किया। अर्थशास्त्र विभाग की प्रमुख सुश्री इन्द्रा रानी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रकाशन, प्रदर्शनी तथा अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार –

स्मरणोत्सव की इस शृंखला में केन्द्र द्वारा निम्न पुस्तकों का संयोजन कार्य भी पूर्ण किया गया है, जो वर्तमान में प्रकाशनाधीन हैं, जिसके संयोजक डॉ. सरवरल हक, अनुसन्धान अधिकारी, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, आईजीएनसीए हैं। इन पुस्तकों का आगामी माह तक प्रकाशन उपलब्ध हो जायेगा –

- ❖ भारतीय ज्ञान धारा ते गुरु नानक बानी (पंजाबी) – प्रो. सुरिन्दर कुमार देवेश्वर
- ❖ श्री गुरुनानक जी दा अद्यतन सामाजिक सार्थकता (पंजाबी) – डॉ. लखवीर लीजिया
- ❖ सन्त परम्परा दे वाचक श्री गुरुनानक देव जी (पंजाबी) – डॉ. कृष्ण गोपाल जी, अनुवादक – डॉ. लखवीर लीजिया
- ❖ Shri Guru Nanak Dev Ji - Life and Times (English) - Dr. G.S. Nayar
- ❖ Essays on the Philosophy of Guru Nanak Dev Ji - M. Muthu Mohan
- ❖ Guru Nanak - A brief Biography - Shri Dharam Singh

ध्यातव्य है कि दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 'गुरु नानक: मानवता के अग्रदूत' विषय के अन्तर्गत इस वर्ष अगस्त माह में दिल्ली में किया जायेगा, जिसके संयोजक डॉ. रेम्बेमो ओडुयो, अनुसन्धान अधिकारी, कलादर्शन, आईजीएनसीए हैं।

इसी प्रकार आगामी योजना में केन्द्र द्वारा एक विस्तृत प्रदर्शनी का आयोजन किया जायेगा जिसके लिये 10 लघु चलचित्रों का निर्माण भी किया जा रहा है, इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अभिजित् दीक्षित, अनुसन्धान अधिकारी, कल्चरल इन्फोर्मेटिक, आईजीएनसीए हैं।



International Mother Language Day Celebration

Prof. Ramesh C. Gaur

Dean & Director (Lib&Inf.); Head - Kala Nidhi Division

International Mother Language Day is celebrated worldwide. The main objective of celebrating this day is to create awareness among the younger generation about the importance of mother language and to safeguard it for posterity. It was also the need of the hour to save our dying languages which are spoken only by elders in many communities and are on the verge of extinction. The theme for International Mother Language Day 2020 was '**Languages without borders**'.

The celebrations commenced with "Maatri Bhasha Divas Sammellan" which was inaugurated by Shri Venkaiah Naidu, Hon'ble Vice President of India at Ambedkar International Centre. Shri Ramesh Pokhriyal 'Nishank' Hon'ble Human Resource Minister, Shri Prahlad Singh Patel, Hon'ble Minister of State (Independent Charge) Culture and Tourism, Shri Sanjay Shamrao Dhotre, Hon'ble Minister of State, Ministry of HRD and Shri Amit Khare, Secretary, Ministry of HRD were also present during the occasion.

All the speakers urged the audience to adopt mother language in our day to day activities for preservation and promotion of the same on national and international platform. The keynote address was delivered by Prof. Uday Narayan Singh, former Vice-Chancellor, Visva Bharati, Santiniketan on the theme '**Celebrating our Multilingual and Cultural Heritage**' chaired by Prof. Girish Nath Jha, JNU and panel discussion on '**Use of Various Language Tools, Technologies for Preservation of Languages**' chaired by Prof. Ramesh C. Gaur, Dean and Head of Kala Nidhi Division, IGNC. Some of the renowned panelists included Prof. Pushpak Bhattacharya, Director, IIT,



International Mother Language Day : Shri Venkaiah Naidu, Hon'ble Vice President of India with Shri Ramesh Pokhriyal 'Nishank' Hon'ble HRD Minister, Shri Prahlad Singh Patel, Hon'ble Minister of State (I/c) Culture & Tourism, Shri Sanjay Shamrao Dhotre, Hon'ble Minister of State, Ministry of HRD and other dignitaries

Patna, Prof. Shobhana Chelliah, distinguished research professor, Dept. of Linguistics and Associate Dean for Research and Development at the College of Information at the University of North Texas (UNT), Mr. Mark E. Phillips, Associate Dean for Digital Libraries, UNT and Prof. D. G. Rao, Director, Central Institute of Indian Languages, Mysore. Dr Sachchidanand Joshi, MS, IGNC was Chief Guest for the occasion and delivered the Valedictory lecture.

This year IGNC in collaboration with UNESCO, New Delhi & Bhashakriti, celebrated International Mother Language Day from 20-21 Feb. 2020, by organizing a seminar, calligraphy workshop, poster competition, exhibition & performances in mother languages.

The event was inaugurated by Mr. Hezekiel Dlamini, Adviser Information & Communication,



Prof. S. S Agarwal, DG, KIIT Group of College, Gurugram; Prof. R. C. Gaur, HoD, KalaNidhi; Mr. Hezekiel Dlamini, UNESCO, New Delhi; Prof. Shobhana Chelliah, UNT; Ms. Ritu Mathur Founder Bhashakriti releasing the publication.

UNESCO, New Delhi, and keynote address was delivered by Prof. Shobhana Chelliah.

This was followed by the panel discussion '**Consortium for Preservation of Endangered Indian Languages**' moderated by Prof. Gaur having eminent speakers- Prof. Shobhana Chelliah, UNT, Mr. Mark E. Phillips, UNT, Mr. Hezekiel Dlamini, UNESCO, New Delhi & Prof. S. S Agarwal, DG, KIIT Group of College, Gurugram & demonstration on '**Light Calligraphy**' by Shri Rajeev Kumar, Calligrapher.

The second day commenced with the case studies on '**Language then and Now**' by speakers from the University of North Texas- Ms. Ana Roeschley; Research Scholar, UNT & North-East- Somi Roy, Founder & Managing Director, IMASI Foundation, Prof. Pauthang Haokip, Associate Professor of Linguistics, JNU, Mr. Marjing Mayanglambam, scholar & artist (Manipur), Mr. Rex Khullar, Language Documenter, Lamkang Community (Manipur) & Thangi Chhangte, Language Documenters shared their experiences about how do they document the dying language heritage in the NER and their difficulties. Prof. Shobhana Chelliah chaired the session.

There were featured lectures by Prof. Sadaf Munshi, Associate Professor, University of North Texas on '**Kashmir Oral History Project**' & Ms. Jaya Jaitly, Founder, Dastkari Haat on '**Role of Calligraphy in promoting Indian Scripts across the Globe**' and, talk and demonstration on

'Devanagari Script & its use to write Various Languages' by Shri Rajeev Kumar.

There were Two-panel discussions one on '**Handwriting- Lost Identity in the Digital Age**' chaired by Ms. Kiran Soni Gupta, Director General, Jawahar Kala Kendra, Jaipur along-with three eminent panelist - Ms. Jaya Jaitly, Shri Rajeev Kumar and Prof. Ramesh C. Gaur.

The Second panel discussion was on '**Role of Mother Tongue in preserving India's Cultural Diversity & Heritage**' having Prof. Sukrita Paul Kumar, D.U., Dr. Anandita Roy Saha, Indraprastha University, Dr. Rajgopal Govinda Swamy, D.U. & Shri Yogesh Joshi, Founder & Managing Trustee Akshay Foundation; Founder Brand India Summit & Rural Brand India Summit on the panel. The panel was chaired by Shri Rahul Dev, Senior Journalist.

During the celebration an exhibition on '**Prachin Lipi Veethika**' (Maatrikapath) was also displayed. The exhibition had a general introductory depiction of the alphabets of ancient Indian scripts prominently displayed: Brahmi, Sharada, Granth, Nandinagari, Maithili and Modi along-with short descriptions etc. The concept, research & curation of the exhibition were done by Dr. Abhijit Dixit and Dr. Kirtikant Sharma.



Shri Ram Bahadur Rai, President, IGNC Trust felicitating Shri Rajiv Kumar in presence of Chief Guest Ms. Kiran Soni Gupta, IAS, Director General, Jawahar Kala Kendra, Jaipur and others



Annual Day Celebration of Kala Nidhi Division

Dr. Shilpi Roy

Research Officer, Kala Nidhi Division

Kala Nidhi division celebrated its annual day on 31st January, 2020 on the auspicious day of Basant Panchami. The celebration began with an important seminar on **"Electronic Theses & Dissertations Life Cycle Management"** on 30th January, 2020. Prof. Bidyut Chakrabarty, VC, Visva Bharati, Santiniketan was the Chief Guest.

Ms. Nirupama Kotru, Joint Secretary, Ministry of Culture, Government of India was the guest of honour. Dr. Sachchidanand Joshi, MS, IGNCA presided over the function. Prof. Ramesh C. Gaur, Dean and HoD (KN) welcomed the guests and also presented the Annual Report of Kala Nidhi for the financial year 2019-2020.

In his address the chief guest, Prof. Bidyut Chakrabarty appreciated the work done by Kala Nidhi & also narrated noteworthy activities of Visva Bharati. He highlighted the huge contributions of Rabindranath Tagore towards humanity and founding of Visva Bharati, an unconventional university where beyond the accepted limits of intellectual & academic pursuits, opportunities

were created for invigorating and sustaining the manifold faculties of the human personality. Ms. Nirupama Kotru also appreciated the work done by Kala Nidhi & other divisions of IGNCA.

An exhibition titled "Manifestation on Ramayana in Indian Visual Art" from the various collection of the Kala Nidhi Cultural Archives, IGNCA was displayed. **IGNCA Journal KalaKalpa's** Basant Panchmi issue, Newsletter **Vihangama** & two publications of IGNCA were also released on this occasion. During this occasion, cultural programme & a film from Kala Nidhi's Mohon Khokar dance collection curated by Dr. Ashish Khokar was also shown.

Report on Activities

The Reference Library of KN Division received various personal collections of books. Approx. 45,000 books have been catalogued in online database, procured 448 new books & 556 books as general gift. During the year 6021 scholars visited the library for research, among them 175 readers took membership. 125 Sanskrit scholars approached library for manuscripts.



Guest of Honor Ms. Nirupama Kotru, Joint Secretary, Ministry of Culture, Government of India sharing her views (L - R) Prof. Ramesh C. Gaur, Dean and HoD (KN); Prof. Bidyut Chakrabarty, Vice Chancellor, Visva Bharati, Santiniketan and Shri Mohan Khokar at the Foundation Day of Kala Nidhi Division.

The Cultural Archives presented four important exhibitions: (i) A photographic exhibition on the Brick Monuments of West Bengal (ii) Worli Painting: Artistic Expressions of Tribal Woman (iii) Gandhi Parv: Remembering Mahatma Gandhi through Paint, Brush, Lens & Shadow Puppet (iv) 'Celebrated Painters and Photographers on Bengal & Santiniketan' from 11th Jan. to 12th Feb. 2020. Hon'ble Prime Minister, Shri Narendra Modi inaugurated the exhibition at Belvedere House, National Library, Kolkata on 11th Jan. 2020.

The Cultural Archives presented an exhibition titled 'Bapu' at Gandhi Smriti in collaboration with National Gallery of Modern Art, New Delhi from 19th Dec. 2019- 12th Feb. 2020. 43 archival materials; photographs from DRD Wadia Collection, puppets & write-up were also provided to Jawahar Kala Kendra, Japiur for their exhibition to celebrate 150th Gandhi Birth Anniversary.

The Manuscript Unit contributed following volumes of Descriptive Catalogue for publication:

- ❧ सूक्ष्मचित्रित पाण्डुलिपियों का विवरण पंजिका, खण्ड-2 (वेदांग) भाग 1-13
- ❧ सूक्ष्मचित्रित पाण्डुलिपियों का विवरण पंजिका, खण्ड-3 (आगम-तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र) भाग 1-5
- ❧ सूक्ष्मचित्रित पाण्डुलिपियों का विवरण पंजिका, खण्ड-4 (दर्शन-जैन-गीता-भक्ति) भाग 1-3
- ❧ शुक्ल यजुर्वेद घनपाठ

The Reprography Unit undertook micro-filming of 131 rolls, provided training to many interns in digitization process. Open Access system was installed & archival database created. Regular work of data input was undertaken. The Division is conducting two PG Diploma Courses i.e. Digital Library & Data Management (PGDDLDM) and Manuscriptology & Palaeography (PGDMP) and two Short Term Certificate courses in Research Methodology and Indian Knowledge Traditions.

During the period the division also organized several International Conferences and workshops. Some of them are as follows:

- ❧ International Workshop on Language Documentation & Archiving was held in June, 2019 with the University of North Texas, USA.
- ❧ 2nd International Workshop on 'Equitable Access to Government Information & Data:



'Bhagavad Gita: Gandhi's Eternal Mother' written by Dr. Anup Taneja released by the dignitaries

Role of Government & Public Libraries in South Asia' in collaboration with the Central Govt. Library Association was held in Oct. 2019.

- ❧ One day Seminar on Philosophic Reflections of Happy and Good Life through Culture in collaboration with the University of Delhi and Centre for Research value, USA, in Jan. 2020.
- ❧ International Iran Cultural Festival was held in collaboration with the Iran Culture House, Delhi on 4 & 5 Feb. 2020.
- ❧ National conference was organised in collaboration with the Asian Library Association in June 2019.
- ❧ One day National workshop on Folk and Indigenous healing practices in Manipur was organised with the University of Manipur.
- ❧ Art Education Summit 2019 was organised in collaboration with the First Art Foundation, Mumbai & CBSE, New Delhi in Dec. 2019.
- ❧ Seminar on 'Revitalizing Indigenous Languages' was held on 20 & 21 Feb. 2020.

In collaboration with UNESCO, the division undertook an important project entitled Mapping of Archives in India under which 90 archives and alike institutions across the country were surveyed to obtain useful information related to archival materials preserved there. A Directory of Archives is in process for publication. A project on the 'Traditional Healing Practices in the Select States of North East region of the country' was undertaken by the Division during the period. The first phase of the project was successfully completed, covering the States of Manipur, Sikkim & Arunachal Pradesh.



Lecture on Angkor Wat: Art, Architecture and Agency

Sumit Dey

Research Officer, Cultural Informatics Laboratory

The Cultural Informatics Laboratory and Academic Unit of IGNCIA organized a public lecture titled 'Angkor Wat: Art, Architecture and Agency' by Prof. Vasudha Narayanan, on 7th January 2020.

The lecture was chaired by Dr. Sachchidanand Joshi, MS, IGNCIA. In her lecture Prof. Narayanan said, the earliest information on the Funan and Chenla kingdoms in Cambodia comes from Chinese texts. However, several versions of origin stories in Vietnam-Cambodia, including that of the marriage of a Prince or Rishi from India and a Naga princess are available in various inscriptions of the past. The idea of the Kaundinya lineage has been put forth in many inscriptions.

The most important part of the lecture was the idea of 'agency'. In the opinion of Prof. Narayanan, Cambodia has been actively choosing symbolisms from the Indian culture and these have become part of their own cultural identity. She pointed to the recurring visual representation of the churning of the ocean and idols of Gods and Goddesses, from ancient temple panels to modern day material culture and even architecture.

The lecture dwelt upon the origin of the Khmer empire; cultural exchanges between Indian and Cambodian cities; and certain subtle similarities between the temple architectures of Angkor Wat and Indian temples at Kanchipuram. She described the relationship between India and Angkor Wat as dynamic, as the two cultures have constantly been negotiating with changing times in upholding their cultural identities and defining their relationship with other cultures of the world. She spoke at large,



Prof. Vasudha Narayanan while delivering her lecture on "Angkor Wat: Art, Architecture and Agency"

about the striking similarities and differences between the historically evolved temple art and architecture, traditions prevalent in Angkor Wat and India. She gave special emphasis on the iconography of the 'Naga' (serpent) which has a historical-cum-mythological context, as depicted in the Naga princess narrative and iconography of Vishnu and his ten incarnations found in Angkor temples.

Prof. Narayanan drew parallels from Indian counter-parts found in different temple architectural styles across the country. She concluded her lecture by sharing with the audience, her concerns over the future and ownership of the temple art work and iconography originating in Angkor Wat and currently lying in various museums in France and other countries.



International Workshop on Textiles on Storage

Simran Sangal

Conservation Assistant, Conservation Division

The Conservation Division of IGNCA, in collaboration with UNINET, Indian Embassy Vienna, and Institute of Applied Arts, organized a workshop titled 'Textiles on Storage', from 10 - 14 February 2020.

The Austrian ambassador to India, inaugurated the workshop. He addressed the participants about the integral role played by textiles in the history of India.

Dr. Sachchidanand Joshi, MS, IGNCA, spoke about the rich cultural history of India. The workshop was attended by 30 participants which includes students, researchers, and faculty members of PGDPC course, National Museum Institute, Archaeological Survey of India, along-with Lady Irwin College, University of Delhi.

Course trainers Ms. Tanja Kimmel and Ms. Carine Gengler, both Professors at the Institute of Conservation & Restoration, University of Applied Arts, Vienna divided the workshop in five days, with each day focusing on a different aspect of preventive conservation of fragile heritage textiles. The first day commenced with an introduction of all the participants, the participants were carefully taught about different fibers, dyes, factors of deterioration of these textiles, and the importance of documentation in conservation.

The second day opened with a lesson and discussion on the equipment and material used in the display and storage of textiles. The participants were explained about the archival quality material which could be safely used for their collections but more importantly what kind of material to be used



Participants discussing with Ms. Tanja Kimmel and Ms. Carine Gengler, during the workshop

and not to be used. This was followed by a visit to the Cultural Archives storage at IGNCA, guided by Shri Tiragi & Shri Anil Verma of IGNCA. The participants were divided in teams and given the task of preparing a condition assessment report for the storage. It was later presented and discussed.

The concluding third day focused on a multitude of practical demonstrations about the appropriate labelling and storage of 2D and 3D textiles of various sizes; how to make different kinds of padding and cushions to help prevent their collections in storage.

A field visit to the Crafts Museum was arranged to have an in depth understanding of the problems and needs of different kinds of textiles, practical difficulties in tackling and not just storing, but also displaying them. Finally, the students were taught safe cleaning methods and the appropriate equipment to be used for fragile textiles. This was the first of its kind workshop on textiles.



2nd International Workshop on “Language Documentation and Digital Archiving”

Prof. Shobhana Chelliah

Distinguished Research Professor and Associate Dean, UNT

The Kala Nidhi Division of the IGNC, in collaboration with the University of North Texas, USA, organized the **2nd International Workshop on “Digital Archiving”** from 11-19 Feb. 2020 at IGNC. The main objective of this workshop was to acquaint the participants with the importance of various digital tools and formats used to preserve the cultural heritage in its physical and intellectual aspect; how it can be preserved for a long period of time and, can be made accessible and understandable to the posterity. The workshop was open to archivists, librarians, academicians, consultants, documentarians, researchers & students of Tibeto-Burman languages and cultures of Arunachal Pradesh, Assam, Manipur, Meghalaya, Mizoram, Nagaland, Sikkim and Tripura.

The inaugural session of the Workshop was attended by eminent personalities, including Padma Shri Prof. Anvita Abbi, an Eminent Linguist & Former Professor, JNU; Mr. Hezekiel Dlamini, Advisor, Information & communication, UNESCO New Delhi, Prof. Shobhana Chelliah, Eminent Linguist & Associate Dean (Advance Research), College of Information, University of North Texas, USA. Dr. Sachchidanand Joshi, MS, IGNC chaired the workshop. Prof. Ramesh C Gaur, HoD Kala Nidhi

and also the workshop Director delivered the welcome address.

The workshop was motivated by the fact that many mother tongues are disappearing with no hope of transmission into the future. Each language holds valuable information on world-view also reveals something new about how humans use language creatively for communication. Literacy in one’s mother tongue can lead to better literacy in a 2nd or 3rd language. Bilingualism and multilingualism ensures higher-level cognitive ability than for mono-linguals. The various expert voices provided diverse perspectives from the point of view of archive users, be they depositors, academics, community members revitalizing language, or students using archives.

Dr.(s)Shobhana Chelliah, Anvita Abbi, Thangi Chhange, Pauthang Haokip, Karthik Narayan and Meiraba Takhellambam discussed to champion and respect India’s linguistic diversity. Many linguists in India are undertaking Language Documentation (LD). Experts said that LD is a thriving field in India, the long-term access and preservation of language data hosted in a state of the art digital archive is still not available. To do this, students were given training in transcription software such as ‘SayMore’.



Group picture of the workshop participants

They also learned about higher order annotation such as part of speech annotation and tagging for semantic domain. A major part of archiving in data management is creating metadata for audio and video recordings.

Another topic was covered evaluating Language Documentation methodology and products for India by Dr.(s) Ramesh Gaur, Karthik Narayan, Shobhana Chelliah and PhD Research Scholars Mark Phillips, Ana Roeschley, and Mary Burke. In order to make native speakers, documentary linguists, and archivists aware of the challenges and opportunities afforded by archiving of language data, we talked about creating curriculum that would include data management and archiving from the beginning of the documentary process. The discussion focused on the advantages for the communities wishing to revitalize their languages & to linguists needing



Mr. Hezekiel Dlamini, Advisor, Information & communication, UNESCO New Delhi, addressing the participants

cross-language comparison to make possible detailed analyzes.

Prof. Chelliah and her team illustrated preferred archiving practice through examples from CoRSAL, the Computational Resource for South Asian Languages, a digital language archive for housing information on the languages of India.



Celebrated Painters & Photographers on Bengal and Santiniketan

Dr. Shilpi Roy

Research Officer, Kala Nidhi Division

Kala Nidhi Division curated an epic exhibition titled '**Celebrated Painters and Photographers on Bengal and Santiniketan**' at Belvedere House, National Library, Kolkata. This exhibition was based on rich cultural resources housed in IGCA Kala Nidhi Cultural Archives, with a special focus to Bengal. It was inaugurated by the Hon'ble Prime Minister of India, Shri Narendra Modi on 11th Jan. 2020 at the Old Currency Building, Kolkata; where the inauguration of renovated cultural spaces and exhibitions took place at Belvedere House, Metcalf Hall, Old Currency Building & Victoria Memorial Hall, Kolkata on a theme "**18th-20th Century Art in Bengal**". This exhibition was very well received & remained open for public from 11th Jan. 2020 to 12th Feb. 2020.

IGCA offered a humble tribute to the Bengal renaissance and Gurudev Rabindranath Tagore

with this very special exhibition showcasing the original works of the Hungarian mother-daughter duo Elizabeth Sass Brunner and Elizabeth Brunner from its rare collection of Cultural Archives. Their portrayal of Santiniketan & Gurudev's aura through their mystic visual oeuvre touches many cords with the grace of their honesty. Visitors were spellbound by forty splendid works done by Hungarian mother-daughter duo between 1930 to 1939; displayed in three rooms of Belvedere House based on the theme nature and Santiniketan, Tagore's persona and events and activities of Santiniketan. Some of exquisite exhibits in this section were: Entrance of Santiniketan, Tagore's house garden, Flowers in the garden of Tagore's daughter, Golden shower tree, our first Holi celebration in Santiniketan, Tagore writing a poem, Women marching for freedom of golden India, A mother



Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi viewing performance at Old Currency Building, Kolkata on the inauguration of the events

Calcutta & others. Visitors had a glimpse of rare and poignant moments of Gurudev & his associates in Santiniketan captured by Shambhu Saha.

This section had exquisite exhibits like Tagore with Pt. Kshitimohan Sen at the Amrakunja; Tagore with Pt. Bhim Rao Shastri; Tagore at Nandini's marriage, Tagore on hearing about the outbreak of World-War-II, Pt. Nehru addressing the audience at the opening of Hindi Bhavan; Abanindra Nath Tagore at work, etc.

introducing her children to Tagore blessing & others. This exhibition also offered a visual treat to the beholders, through showcasing a scintillating series of photographs of India & her people framed in time by legendary photographers: Raja Deen Dayal (1844-1905), Henri Cartier-Bresson (1908-2004), Shambhu Saha (1905-1988) & Sunil Janah (1918-2012) whose work inspired many, all over the world. They brought in repose in their subjects, a deep quietude & an effervescent aroma of delectable palate of people & places, their lifestyles and mental state, frozen in the moment of photo artistry. In this exhibition IGNC presented 95 mesmerizing photographs mounted from negatives with a special focus to Bengal. In Raja Deen Dayal section portraits of common people, royals and renowned personalities like Dada Bhai Naoroji, Jamshetji Nusserwanji Tata, VIth Nizam and places like Delhi Darbar, Writers' Building of Calcutta, Street View of Calcutta etc. were on view. IGNC also re-created a photo studio by displaying 19th century original mono-rail camera used by Raja Deen Dayal. In Henri Cartier Bresson section visitors witnessed a classy documentation of socio-political life of pre & post independent India. Some exquisite exhibits of this section were: Exercise at the Kurukshetra refugee camp; Money changer in Jaipur market; Children making carpets; Woman drying cloth by the river; Uttarayan kite flying festival; Kumbhmela & others. Visitors also fascinated with sincere documentation on the tribal & socio-economic life of India during the early 20th century by Sunil Janah. This section contained star exhibits like Garo Couple fishing in a steam, Meghalaya, Drying Jute in Jute mill yard,



Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi unveiled the 'Ardhnarishwar' sculpture at Old Currency Building in Kolkata in the presence of the Governor of West Bengal Shri Jagdeep Dhankhar; Union Minister of State (I/c) for Culture & Tourism, Shri Prahlad Singh Patel and Sh. Raghvendra Singh, CEO, DMCS. Pic courtesy: PIB.

The section Vignettes of Bengal by Foreign Travellers – early 19th to mid-20th century culled from the illustrations of rare books of IGNC offered a kaleidoscope of cultural motifs, people, art & architecture of then Bengal. Some exhibits of this section were Durgah Poojah, Munsah poojah, Ramayan Gayan, View of Calcutta Loll Bazar & Portuguese Chapel, Sati: Shoho-Gomon, Mutinous Sepoys Campaign in India 1857-58 and others.

IGNC also presented a documentary on Gurudev Rabindranath Tagore and dance drama 'Natir Puja', the only film written and directed by Rabindranath Tagore (1932) from IGNC's rare collection. The exhibition was well appreciated by all distinguished visitors.

Events at a Glance



Union Cabinet Minister for Textiles and Women & Child Development, Smt. Smriti Zubin Irani and Dr. Sachchidanand Joshi, MS, IGCA, viewing Swar Santati Exhibition at IGCA



Dr. Sachchidanand Joshi, MS, IGCA, felicitating Mr. H. E. Hezekiel Dlamini, Advisor, Information & Communication, UNESCO New Delhi at IGCA



Participants creating the tools for conservation during a five day International workshop on "Textiles on Storage"



Inauguration of one day Seminar on ETD Life Cycle Management at IGCA by Dr. Sachchidanand Joshi; Prof. J P Singh Joorel; Prof. Ram Ramaswamy; Dr. Ramesh C. Gaur and other dignitaries



अयोध्या पर्व पर दीप प्रज्वलित करते हुये, सन्त श्री नृत्यगोपाल दास जी महाराज, न्यास अध्यक्ष श्री रामबहादुर राय, सदस्य सचिव तथा सम्मानित अतिथिगण



His excellency Dr. Ali Chegani, Ambassador of Iran in India and Dr. Sachchidanand Joshi, MS, IGCA inaugurating the Iranian Arts Exhibition at IGCA



Participants celebrating after the successful completion of a five day International workshop titled "Textiles on Storage"



Padma Shri V.K. Munusamy delivering lecture titled "The Art of Traditional Terracotta Sculpturing in South India" on Lecture-cum Demonstration at Puducherry

Events at a Glance



क्षेत्रीय कार्यालय आईजीएनसीए, राँची द्वारा आयोजित समागम कार्यक्रम में श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, महामहिम राज्यपाल झारखण्ड प्रदर्शनी का अवलोकन करती हुईं



भोजपुरी साहित्य के प्रसिद्ध गीतकार एवं कवि पण्डित हरिराम द्विवेदी, क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी में स्मृति व्याख्यान प्रस्तुत करते हुये



Dr. Sachchidanand Joshi delivering a talk on ETD Life cycle Management Seminar with (L) Prof. J P Singh Joorel @ Prof. Ram Ramaswamy at IGCA



Prof. Radha B. Sarkar, HoD, Kalakosa Division felicitating eminent scholar Prof. P.S. Filliozat, the speaker of the lecture on Pampamahatmya on the cultural history of Hampi



Shri Rajeev Kumar explaining the style of calligraphy during the workshop on calligraphy



Dr. Sachchidanand Joshi, MS, IGCA inaugurating the lecture in presence of Dr. Ayswaria Wariar, Dr. Ratan Parimoo, Dr. Sweta Prajapati & Prof. Anjali Karolia at Vadodra



Vihangama released on the foundation day of Kala Nidhi Division (R-L) Dr. Sachchidanand Joshi, Shri Mohan Khokar, Prof. Bidyut Chakrabarty, Ms. Nirupama Kotru & Prof. Ramesh C. Gaur



Participants during the Vedic Fashion show in "Amritasya Putraha: Vedic Re-engineering" Conclave 2020 at Vigyan Bhawan, New Delhi



Amritasya Putraha: Vedic Re-engineering Conclave 2020

Sumit Dey

Research Officer, Cultural Informatics Laboratory

A day-long event was organized by Divya Jyoti Jagrati Sansthan (DJJS), a non-profit socio-spiritual organization with world-wide outreach, on 16th Feb. 2020 at Vigyan Bhavan, New Delhi. Ministry of Culture, Govt. of India & Vedic Heritage Portal (VHP), a flagship project of the Ministry of Culture, being managed at IGNC, were the prime collaborators for this event. The event was in line with the aims and objectives of VHP, IGNC & DJJS, respectively. As an organization DJJS aims to promote social reforms and traditional cultural values, with special emphasis upon the Vedic knowledge system, through self-development programmes such as 'PEACE'. VHP, on the other hand, disseminates Vedic wisdom, in various fields of knowledge with the aid of Information Technology. The interactive event, attended by more than 1000 participants, saw a unique marriage of Vedic theories and praxis.

The event was inaugurated by distinguished guests, including senior members of DJJS, the Hon'ble Union Minister of Commerce & Industry Shri Som Parkash; Dr. Sudhir Lall, Project Director, VHP; Prof. P. Jha, Director, CIL and other dignitaries. Aimed towards self development, the conclave was divided into 5 consecutive sessions named after the 5 Koshas of the Atman: Annamaya (Physical), Pranamaya (Pranic), Manomaya (Psychological), Vigyanamaya (Intellectual) and Anandamaya (Spiritual), as propounded in the Taittiriya Upanishad and other Vedic texts. Each of the sessions was further divided into sub-sections. Representatives of DJJS conducted the sessions.

The first session revealed the nature of the Koshas and involved physical exercise in light of treatises like the Natya Shashtra. With the beat of the Mantras the participants practiced various facial expressions and Mudras (physical gestures) which have been handed down from one generation to the other and contain therapeutic properties. This was

followed by a fashion show in which dresses were inspired by attires of the Vedic era.

The second lecture-demonstration session focused on the cleansing of the nervous system through a Vedic detox system prescribed by ancient masters of Ayurveda. The session encouraged the participants to appreciate the three constituent elements of the human body-Vata, Pitta and Kapha, and breathing exercise for a healthy living.

The third session revolved around ancient Vedic prescription for modern day familial relationships. Theoretically the session dealt with the 16 Samaskaras and Dampatti Sutras as possible methods for solving problems in nurturing relationships. The session was conducted through performances around the tale of a Vedic sage couple and also included the tale of Garuda as fine example of how to strike a balance between the personal and the professional realms.

The fourth session was meant for sharing knowledge regarding the detoxification and rejuvenation of the brain and cerebral activities through the Vedic tool of Yoga Nidra deep relaxation process for the brain and the limbs without actually sleeping.

The final session dealt with the Upanishadic injunction regarding the functioning of the mind and body and the role of spirituality in controlling the vices of the mind and body through Chakras. Furthermore, the tale of the Jeevatman and Paramatman in the form of two birds as narrated in the Mundakopanishad was enacted by performers from DJJS. How the Spiritual force has an edge over the sense organs in controlling the mind which is like a horse driven chariot was beautifully conveyed in the session. The event concluded with a presentation about the socio-spiritual activities of DJJS and the founding apostle of the organization, Shri Ashutosh Maharaj Ji. The participants were also given certificates.



Lecture on “What does Pampamahatmya reveal on the cultural history of Hampi?”

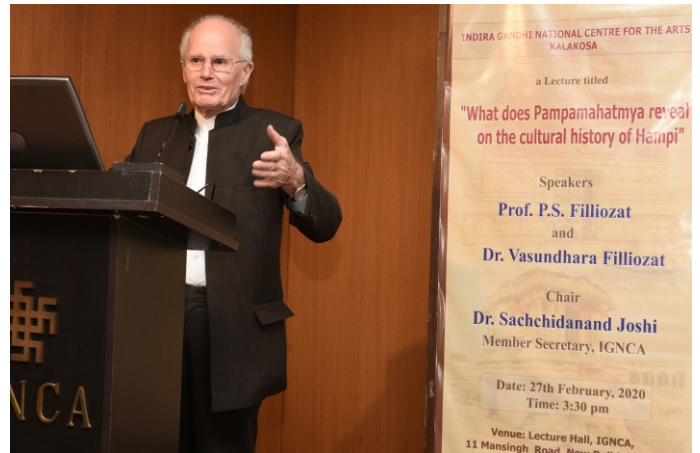
Shivani Gupta

Project Assistant, Nari Samvaad Prakalp

An illustrated lecture titled “**What does Pampamahatmya reveal on the cultural history of Hampi?**” was organized on 27th Feb. 2020 by Kalakosa Division, IGNC. The lecture was delivered by Prof. Pierre Sylvain Filliozat & Dr. Vasundhara Filliozat, editors & translators of an ongoing Kalamulashastra series (KMS) project ‘Pampa Mahatmya’, which is being coordinated by Dr. Sushma Jatoo, Senior-Faculty, Kalakosa Division. The Pampamahatmya along with its English translation will be published by Kalakosa, IGNC, under its KMS publication series which will also be complemented with images, illustrations and the maps of this historical site- Hampi.

In the beginning, Dr. Radha B. Sarkar, HoD, Kalakosa felicitated the speakers. Dr. Sudhir Lall, Senior Faculty, Kalakosa Division, welcomed and introduced the speakers along with introducing the topic of the lecture. Prof. P.S. Filliozat is a Sanskrit enthusiast, and the recipient of ‘Certificate of Honour’ (Rashtrapati-Samman) for Sanskrit studies from the Hon’ble President of India. Dr. Vasundhara Filliozat is one of the senior-most Art Historians and Epigraphists of India. Her works on Hampi-Vijaynagara have been acknowledged by the Government of Karnataka by honouring her with many prestigious awards. Both the scholars have published dozens of books and written several articles focusing on Agmas, Art history, Epigraphy, etc.

Prof. P.S. Filliozat & Dr. Vasundhara Filliozat began the lecture-presentation by reciting a Sanskrit shloka and both the scholars thanked Dr. Sachchidanand Joshi, MS, IGNC and the officials of Kalakosa Division for organising the lecture. The scholars spoke about their research project on Pampamahatmya, the Sthala-Purana of Hampi, which has been declared as the UNESCO World Heritage Site in 1986. The Pampamahatmya is the source book of the site in which the detailed



Prof. Pierre Sylvain Filliozat addressing the audience

description of Hampi is recorded. In the lecture, the scholars emphasised on the history and town planning of this site, different monuments along with their remarkable features.

Prof. P.S. Filliozat highlighted this ancient site by calling it as the best expression of “Shaiva Bhakti” which is clearly mentioned in the primary sources, i.e, inscriptions available at the site, which enable the contemporary scholars to reconstruct the history of this place. Dr. V. Filliozat appreciated the importance of contemporary literature in vernacular languages, especially medieval Kannada, for interpreting the physical remains of the site. The speakers also mentioned the assistance & help provided by several contemporary scholars by compiling and translating some parts of Pampa-Mahatmya (Hemakutakhanda), a body of local Sanskrit writings on the religious lore of this Shaivite pilgrim site.

The lecture aimed at identifying and discussing the role of primary textual sources, fundamental to the Indian world-view in interpreting the archaeological site-Hampi. Created by the speakers, a ten-minutes long documentary on Hampi was also screened. Towards the conclusion, Dr. Radha B. Sarkar offered vote of thanks.



हलमा परम्परा : जाग जो म्हारे हंगडा भाई, कण निद्रा मा होता

ब्रजय मिश्र

समन्वयक, जनपद सम्पदा विभाग

मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले में पर्यावरण संरक्षण एवं ग्लोबल वॉर्मिंग को लेकर एक अनोखी पहल की गई है। जहाँ दुनियाभर में ग्लोबल वॉर्मिंग को लेकर चिंता जताई जा रही है, वहीं मध्यप्रदेश का एक छोटा सा आदिवासी बाहुल्य जिला अपनी संस्कृति से उपजे एक रिवाज से इसका हल निकालने की बात कर रहा है, इस उपाय का नाम है 'हलमा'। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र इस आदिवासी समागम का साक्षी बना और साथ ही केन्द्र इस अनोखी प्रथा पर एक डाक्यूमेंट्री फिल्म भी बना रहा है।

झाबुआ में काम कर ही शिवगंगा संस्था ने इस अद्भुत परम्परा को बड़े फलक पर सोचा और धरती के संरक्षण के लिये हलमा बुलाया। उन्होंने भील-भिलाला आदिवासियों से कहा कि आपके पूर्वज शिव ने हलमा बुलाया है क्योंकि धरती का गर्भ सूख रहा है (भील आदिवासी भगवान् शिव को अपना बीज पुरुष मानते हैं)। जिसकी घोषणा के बाद पन्द्रह हजार से ज्यादा भील-भिलाला हाथीपावा की पहाड़ी पर जमा हो गये और कुछ ही घंटों में तीस हजार से ज्यादा कंटूर ट्रेंचेस खोद डाले। शिवगंगा की कोशिशों से अब आदिवासी युवा और समाज जो अपने ही मूल्यों को भूलता जा रहा था आज फिर अपनी परम्पराओं की ओर लौट रहा है।

हलमा कार्यक्रम की सफलता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसमें जिलेभर के सभी गाँवों से करीब 15 हजार के करीब लोग पहुँचे। यही नहीं इसके अलावा देशभर के पर्यावरणविद्, आईआईटी के छात्रों ने भी इस हलमा में शिरकत की। कार्यक्रम की शुरुआत गेंती यात्रा के साथ हुई जिसमें गाँव के बच्चे, बूढ़े, महिलायें, पुरुष आदि सभी लोग शामिल थे, सभी ने अपने-अपने कंधों पर गेंती-फावड़ा रखकर पूरे शहर भर का चक्कर लगाया। दूसरे दिन (1 मार्च) को उन्होंने नये कंटूर ट्रेंचेस बनाये और पिछली बार बनाये कंटूरों को ठीक किया। एक कंटूर, दो मीटर लंबा, आधा मीटर चौड़ा और आधा मीटर



हलमा के दौरान हाथीपावा की पहाड़ी पर संगठित लगभग पन्द्रह हजार भील-भिलाला आदिवासी तथा जनसमुदाय

गहरा होता है। ढलान वाले इलाके में इस तरह नालीनुमा कंटूर बनाये जाते हैं जिससे एक कंटूर के भर जाने पर उसका पानी दूसरे कंटूर में जमा हो जाये। एक अनुमान के मुताबिक एक कंटूर अपने क्षमता से 20 गुना पानी जमीन के भीतर पहुँचा देता है। एक कंटूर में एक बार में 0.5 क्यूबिक मीटर पानी जमा होता है। इसके अतिरिक्त इसके कई अप्रत्यक्ष फायदे भी हैं जैसे बायोडाइवर्सिटी बढ़ जाती है, जानवरों के चारे के लिये ढेर सारी घास उपलब्ध हो जाती है।

हलमा के दौरान स्वयं प्रबंधन और अनुशासन की जीती जागती मिसाल देखने को मिलती है। कैसे किसी जगह पर एक साथ 10 से 15 हजार लोग जमा होते हैं, वो एक साथ दो दिन रहते हैं, खाते हैं, दूसरे दिन एक कतार बनाकर नाश्ता और पानी लेते हैं और फिर कतार बनाकर पहाड़ पर चढ़ते हैं। इन लोगों में 5 साल से लेकर 60 साल तक के लोग हैं। सब एकसाथ जुट जाते हैं, एकसाथ कई गेटियाँ खुदाई करती है, कई फावड़े मिट्टी निकालते हैं, तगाड़िया मिट्टी फेंकती है। कई छोटे हाथ पत्थरों को उठाकर एक के ऊपर एक जमाकर पाल बाँधते हैं। फिर सभी उसी कतार के साथ वापस लौट जाते हैं। इस पूरी प्रक्रिया में कहीं कोई चोटिल नहीं होता है, किसी की किसी के साथ कोई बहस नहीं होती है, कोई झड़प नहीं होती है, यहाँ तक की इतनी भीड़ होने के बावजूद आपको कोई शोर सुनाई

नहीं देता है। यह प्रबंधन उन लोगों को भी बहुत कुछ सीखा देता है जो सोचते हैं आदिवासियों को विकसित किये जाने की आवश्यकता है। जबकि सच्चाई यह है कि हमें उनसे सीखने की जरूरत है।

हलमा जैसी परम्पराओं को स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाये जाने के सन्दर्भ में भी विचार किया जाना चाहिये। बीते दशकों में झाबुआ और अलीराजपुर में जिस तरह से जंगल कटे उसका नतीजा मृदा कटाव के रूप में आया। जिसकी वजह से पहाड़ों से लेकर खेतों तक में नुकसान देखने को मिला। इसे बचाने का एकमात्र तरीका है कि वहाँ पर जलग्रहण क्षमता को बढ़ाया जाए। इसके लिए सबसे कारगर उपाय होता है कंटूर ट्रेंचेज मतलब खंतियों का निर्माण।

शिवगंगा पिछले 20 सालों से इस क्षेत्र में पर्यावरण सुधार को लेकर काम कर रही है। शिवगंगा के संस्थापक और पर्यावरण से जुड़े काम में बेहद सक्रिय भागीदारी रखने वाले पद्मश्री महेश शर्मा, न्यासी सदस्य, आईजीएनसीए कहते हैं कि यहाँ होने वाला हलमा किसी संगठन के बस की बात नहीं है। ये तो बस लोगों का उत्साह ही है, जो किसी के भरोसे रहने के बजाये स्वावलम्बी होकर स्वयं ही अपनी समस्याओं को निपटा लेते हैं।



हलमा के दौरान तीस हजार से ज्यादा कंटूर ट्रेंचेस खोदते हुये भील-भिलाला आदिवासी तथा झाबुआ जनसमुदाय

आदिम भारत हमें आसानी से सिखा देता है कि ग्लोबल वार्षिक के लिये चिंता प्रकट करने से कभी समस्या हल नहीं हो सकती है, और अगर कोई काम श्रम से ही हल होना है तो उस पर बातें करने की क्या जरूरत। अब हलमा को थोड़ा यूँ समझिये—पुनिया खेड़ा गाँव के तड़वी हैं। तड़वी एक तरह का परंपरागत सरपंच होता है, जो एक ही परिवार की पीढ़ियाँ बनती हैं। पुनिया अपना घर बना रहे थे और कई कोशिशों के बाद भी छप्पर यानी छत नहीं डाली जा पा रही थी और इस चक्कर में निराई—जुताई का समय भी निकलता जा रहा था, फिर उन्होंने हलमा बुलाया यानी अपने गाँव के लोगों को मदद के लिये बुलाया। दूसरे दिन आदमी, औरत, बच्चे बड़ी संख्या में उनके

ठिकाने पर पहुँचे, वे सभी लोग अपना गेंती—फावड़ा साथ लाये थे। देखते ही देखते उनके घर की छत भी पड़ गई और खेत भी जुत गया। इस काम में दो घंटे भी ना लगे। हलमा के बाद गाँव के लोगों को पुनिया ने मक्के और चने का बाखला परोसा (चने को एक हंडी में पीसकर पानी के साथ पका लिया जाता है)।

हलमा परम्परा पर चलते आदिवासियों ने कई सामुदायिक वन और तालाबों का निर्माण किया है। झाबुआ के खेड़ा गाँव में सभी लोगों ने मिलकर मात्र 28 दिन में ही अच्छा खासा बड़ा तालाब बना दिया। इसी पर अमल कर आस—पास के दूसरे गाँवों में भी ऐसी सफल कोशिशें हुई।

संसाधनों की कमी भी इन अभियानों के आड़े नहीं आ पाई। खेड़ा के तालाब की खुदाई के समय तालाब नपती के लिए चूना या लम्बी रस्सी नहीं होती थी तो तालाब की जमीन की सीध नापने के लिए लोगों को एक लाइन में खड़ा कर दिया जाता और फिर हर आदमी अपने नीचे एक पत्थर को जमीन में गाड़ देता था इस तरह से सीधी लकीर बन जाती थी। तालाब बनाने की इस प्रक्रिया में गाँव के लोग मिलकर एक जगह बैठते हैं और तालाब खुदाई की तारीख तय करते हैं फिर उस दिन गाँव के सभी लोग बाजे—गाजे के साथ उस जगह पर पहुँचते हैं।

आदिवासियों की यह कोशिश वास्तव में प्रकृति रूपी पंचदेवों को जीवित रखने की पहल के रूप में देखी जानी चाहिये। प्रकृति तभी रहेगी जब सभी पाँच देव, जल, जंगल, जमीन, जन और जानवर जीवित रहेंगे और इसमें भी सबसे पहले पानी रहेगा तभी बाकी सब बच पायेंगे।

इसे इस तरह भी समझा जा सकता है कि यहाँ जल को जलहन देवी, जंगल को वनमाता या सोहरण माता, जमीन को जमी माता, जन को मानवदेव और जानवर को गोमाता जैसे देव मानकर पूजा जाता है। यहाँ एक बार इस गीत को भी महसूस किये जाने की जरूरत है जो पूरे हलमा के दौरान उत्साह से गाया जाता है —

जाग जो म्हारे हंगड़ा भाई, कण निद्रा मा होता हो
धरती माता तर ही देगी, कणनिद्रा मा होता हो
गैती लैजो, फावड़ा लैजो, कणनिद्रा मा होता हो
डैम बंधजो तालाब बंध जो, कणनिद्रा मा होता हो
गामै गामा पौधा लगणजो कणनिद्रा मा होता हो
कामो करतो धरमा बढलौ कणनिद्रा मा होता हो
हलमा करिनो कामौ करिजो कणनिद्रा मा होता हो।

इसका अर्थ बस इतना ही है कि जाग जाओ सभी भाईयों, नींद से उठो, धरती माता सब कुछ देगी, नींद से उठ जाओ



Programs at Regional Centre Puducherry, IGNCA

Dr. Gopal Jayram

Regional Director, Regional Centre Puducherry, IGNCA

The Prehistoric Cultural Practices in Sub-Saharan Africa and South India

Puducherry Regional Centre, in association with Dept of Anthropology and School of Social Sciences & International Studies, Pondicherry University conducted a Lecture on "**The Prehistoric Cultural Practices in Sub-Saharan Africa and South India**" on January 24, 2020. The Guest for the Special Lecture was Shri P. Rajeswaran, Author of the book "On Its Own". Prof. P. Moorthy, Dean-School of Social Sciences, Pondicherry University presided over the function and Prof. K. Rajan, Dept. of History, Pondicherry University was also present on the occasion. Dr. A. Chellaperumal, Prof & Head, Dept. of Anthropology, Pondicherry University had delivered the welcome address.



Prof. K. Rajan addressing in the UMISARC Hall

Prof. P. Moorthy had given a short introduction regarding the significance of the interest the upcoming scholars of research have to devote towards bringing out the cultural practices pre historically held in Sub-Saharan Africa, as they were practiced in south India. Prof. Rajan had also emphasized the importance and connectivity, one

has to find between cultural practices promulgated in the pre-historic times in both Sub-Saharan Africa and South India. Being a keen participant - observer of many countries' cultural as well as cross-cultural studies, Shri Rajeswaran said that during his 36 years in Africa had observed many similarities of cultural behaviours, rituals, especially the way of worshipping as evidences of cross-cultural connection between Southern Africa & South India. While giving examples, Shri Rajeswaran had narrated many instances of ancestral worshipping practices held in Southern Africa and their similarity with South Indian rituals with regard to ancestral worshipping, especially, in the Southern-most end of Tamilnadu.

The similarities were not only about ancestral worship but are also present in the every day observances of social and religious paradigms of communication. Shri Rajeswaran had narrated examples of similar cultural exchanges which could be found between the two countries. The concept of how the cultural practices Pre-Historically followed by the Africans as well as the South Indians especially the Tamils had made a long transmission and had a smooth transformation among them, was well explained by the eminent scholar Shri Rajeswaran.

Dr. Gopal J, Regional Director, Regional Centre, Puducherry proposed the vote of thanks. Along with the special lecture program an exhibition was also organised displaying the artefacts made by the so-called majoraboriginal tribe (San) of the Sub-Saharan, being spread around countries specifically of Botswana, Zimbabwe, Namibia & South Africa.



Hon'ble Lieutenant Governor Her Excellency Dr. Kiran Bedi interacting with students.

Celebrating National Girl Child Day

Regional Centre, Puducherry organised the National Girl Child Day program on 24th Jan. 2020 at Raj Nivas (Residence of the Governor) Puducherry. Dr. Kiran Bedi, Lieutenant Governor of Puducherry interacted with the budding students and took it as an opportunity to celebrate the spirit of Girl Child.

A Puppet Show, on the theme of "**A Girl Child is a Boon of Nature Divine**" was organised as part of the celebration. Addressing the students, Her Excellency Lieutenant Governor, Dr. Kiran Bedi appreciated the kind of creative expressions showcased in the Puppet Show and said, it would enhance the confidence of Girl Child and equip her



Hon'ble Lieutenant Governor Her Excellency Dr. Kiran Bedi with members

with renewed self-esteem. The Puppetry art form was performed by "Thannambikkai Kali Kuzhu", which being an ancient thought-provoking method used to bring impact upon the viewers in order to understand the deeper social issues, found rampant every-where. The script was written by Ms. Elizabeth and performed by six artistes, including three differently-abled persons & two of them being sight impaired; & one, being a differently-abled performing artiste. More than 150 students and all staff-members from Muthu-Rathinam-Arangam Higher Secondary School and Presidency Higher Secondary School had

participated. A short film, titled "Magale-Magizhchi" (Endeared Daughter: Gleeful) a 12 - minutes film show, was also screened on the occasion. The film dealt with the story of how a father who hated the birth of his daughter later changed his mindset to be an ardent admirer of a girl child. Her Excellency Lieutenant Governor Dr. Kiran Bedi had spend quality time with large number of the participants and students.

All the Puppet show performers were honoured with certificates. The vote of thanks for this program was presented by Dr. Gopal J, Regional Director, Puducherry, IGNC. The event was jointly organised with Raj Nivas, Puducherry.



Hon'ble Lieutenant Governor Her Excellency Dr. Kiran Bedi honoring vision impaired and Physically challenged artists.



Lecture on Manuscripts Treasure of India

Dr. Ayswaria Wariar

Regional Director, Regional Centre Vadodara, IGNCA

The Regional Centre Vadodara, on the 10th of Jan. 2020, under the Tattvabodha series of the National Mission for Manuscripts (NMM), organized a talk by Dr. Sachchidanand Joshi, MS, IGNCA. This event was held at Dr. Mrunalini Devi Puar Auditorium, Faculty of Family and Community Sciences, MSU, Baroda. The event was conducted by RCV, IGNCA in collaboration with the Oriental Institute & Department of Clothing and Textile, Faculty of Family and Community Science, The Maharaja Sayajirao University of Baroda.

The program was attended by a large gathering of academicians, scholars and students. Eminent guests were Prof. Ratan Parimoo, renowned Art Historian and Ex. Dean, Faculty of Fine Arts; Sanskrit Poet Prof. Rabindra Kumar Panda, Dept. of Sanskrit, MSU; Dr. Sweta Prajapathi, Director I/c Oriental Institute, MSU & Prof. Anjali Karolia, Dean, Faculty of Family & Community Science, MSU. Both Dr. Prajapathi and Prof. Anjali in their respective speeches warmly appreciated this collaboration & expressed desire to work closely with IGNCA on several future projects.

Dr. Joshi, MS, IGNCA spoke eloquently on the topic, **“Manuscript Treasure of India: Repository of**

Our Heritage”. The talk was presented through PPT, which showed some of the rarest of rare manuscripts in different shapes, sizes, varieties, languages and themes. Dr. Joshi threw light on the current status of manuscripts across the country and the extensive work carried out by the NMM. The largest collection of manuscripts being in India, has still not inspired the youth to take up its study as a career opportunity, Dr. Joshi observed. Manuscripts reflect the magnificent past of Indian culture & civilization. There are more than 12 million manuscripts across the globe. The largest collection of manuscripts is in India, thus becoming a symbol of India’s scriptural & cultural heritage. It is believed that the total number of manuscripts across the globe is less than the manuscripts preserved in Indian subcontinent alone.

With the increased global awareness regarding India’s ancient medicine systems such as Ayurveda & Unani, Building Science, Vāstu Sāstra and older canons of Literature, Arts and Philosophy researchers both Indian and Foreign, inevitably turn to the manuscripts for source material. However manuscripts are often found to have been neglected for decades, many in very poor physical state-insect ridden, fungus infected or fragile. Dr. Joshi emphasized in his talk that much needs to be done in this area, to recover and restore them. He also stressed the fact that one of the main challenges is that there is a lack of connection between the so-called ‘modern knowledge’ and the knowledge contained in manuscripts. Scholars who can study and use manuscripts are fast disappearing and a new generation of scholars are emerging who are unable to rise to the challenge. The change must come from within, he said. Only if young India realizes the need to protect this vast reservoir of knowledge can much of the initiatives of NMM be more fruitful. There has to be more



Dignitaries in the audience during the program

interest to learn the ancient scripts or lipi such as the modi or sharada, to be able to decipher and reinterpret the knowledge systems so as to apply them in modern scenario.

Dr. Joshi further highlighted the extensive work carried out by IGNCAs under the NMM works towards Conservation, Documentation & Digitization of the Manuscripts. NMM also provides assistance to the Institutions with large holdings of manuscripts. Secondly, courses related to the field of Manuscriptology and Paleography are also being offered by IGNCAs and thirdly IGNCAs, NMM, publishes rare & unpublished manuscripts. Most importantly, to create further awareness and deep

study in this subject also various activities are being organized periodically across the country.

Thus, Dr. Joshi, stressed to preserve manuscripts as a valuable legacy inherited from our ancestors as a legacy for future generations. Besides spreading awareness & knowledge about the inherent value of manuscripts, the Member Secretary's talk encouraged youngsters to join the growing field of 'Manuscriptology' under conservation, preservation & research. Most importantly, the talk drew home the point that manuscripts need to be saved for their importance as reservoirs of ancient Indian knowledge systems and records of our culture and heritage.



Programs at Regional Centre Bengaluru, IGNCAs

Aparna Sharma

Project Assistant, Regional Centre Bengaluru, IGNCAs

With the beginning of the new decade, RCB, IGNCAs organised the 3rd edition of "Sri Jayachamarajendra Wadiyar Vicharadhaare" lecture series by Dr Sukanya Prabhakar, a noted musician and eminent research scholar. A public lecture & consequent discussions on her book titled 'Contributions of H.H. Jayachamaraja Wadiyar to Carnatic Music' were held amongst patrons of music and scholars. Weekly-Yoga sessions and documentary movie screenings were featured both in 2019-2020.

Towards the end of January, the centre along with the Department of Manuscriptology, Kannada University, Hampi, organized a lecture on the topic 'Vishwakarma Craftsmanship: The cultural foundation of the creative economy of India' by Dr V P Raghavan, Tagore National fellow in cultural research at the RCB, IGNCAs.

Regular classes for the second semester of the PG Diploma in Manuscriptology & Palaeography were resumed in the month of January after the December Session. A shorter module on Heritage

Conservation & Research Methodology was also launched & opened to the general public for participation. Furthermore, individual modules on scripts of Nandinagari & Nagari were also opened to the general public along with the PG Diploma students so as to facilitate a wider access to learning of the ancient Indian scripts. RCB also organized regular sessions on written and spoken Kannada to facilitate learning of the local language for staff members.

The month of February saw celebrations of the 550th Birth Anniversary of Guru Nanak Devji. A lecture on the 'Contributions and Cultural Richness Promoted by Guru Nanak Devji' by Shri Rajan Khanna, columnist and author, was organized. In tandem with this, a cultural & musical event was also organized by the children of Shri Guru Singh Sabha, Ulsoor.

Along with this, bi-weekly movie screenings were also held at RCB which included Bareilly My Bareilly, Bhramavadinis. The first women's Gurukul in India, Aqeedatke rang and Gopi Bhat ka Tamasha.



क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी, आईजीएनसीए के कार्यक्रम

डॉ. रजनीकान्त त्रिपाठी एवं त्रिलोचन प्रधान

परियोजना सहयोगी, क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी, आईजीएनसीए

धर्मशास्त्र के क्षेत्र में नवीन पाण्डुलिपियों का अन्वेषण एवं सम्पादन



अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत करते हुये प्रो. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र, संकाय प्रमुख, संस्कृतविद्या धर्मविज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी एवं राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 'तत्त्वबोध व्याख्यान शृंखला' के अन्तर्गत दिनांक 03 फरवरी 2020 को विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय निदेशक, प्रो. विजय शंकर शुक्ल ने व्याख्यान शृंखला की अवधारणा तथा प्रमुख वक्ता, श्रीजगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के अवकाश प्राप्त आचार्य एवं धर्मशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान् प्रो. ब्रज किशोर स्वाई एवं सत्र के अध्यक्ष, संस्कृतविद्या धर्मविज्ञान संकाय के संकाय प्रमुख प्रो. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र के बौद्धिक अवदानों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि पाण्डुलिपियों के माध्यम से ही भारत के सही स्वरूप को जाना जा सकता है। भारत की इस ज्ञान निधि को समझने एवं खोजने में लगभग 200 वर्ष बीत गये। इन निधियों पर प्रकाश डालने के उद्देश्य से 2004 में राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की स्थापना तथा 'वादे वादे जायते तत्त्वबोधः' इस सूत्र के साथ ही 'तत्त्वबोध व्याख्यान शृंखला' की शुरुआत की गई।

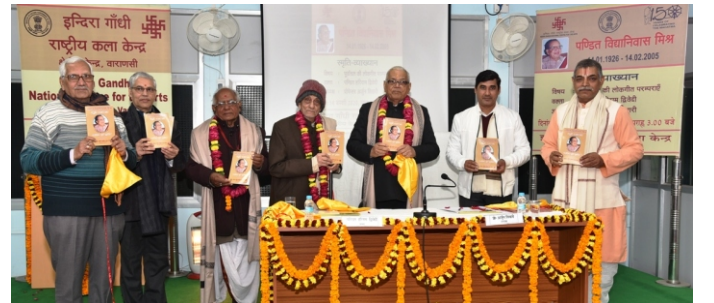
कार्यक्रम के वक्ता प्रो. स्वाई ने 'धर्मशास्त्र के क्षेत्र में नवीन पाण्डुलिपियों का अन्वेषण एवं उनके सम्पादन के प्रयत्न' इस विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने धर्मशास्त्र के तीनों सोपानों का उल्लेख करते हुए कहा कि धर्मशास्त्र की पाण्डुलिपियों के सम्पादन से पहले यह जानना जरूरी है कि यह किस प्रकार का ग्रन्थ है। मूलग्रन्थ है या टीका, भाष्य, अथवा निबन्ध ग्रन्थ है, क्योंकि इन सभी ग्रन्थों का

एक अलग वैशिष्ट्य है। सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना को सुदृढ़ बनाये रखने के लिए निबन्धकार प्रयत्न करते हैं। अतः पाठ निर्धारण के समय सामाजिक स्थिति, लोकाचार, सम्भावना आदि का ध्यान रखना चाहिये और वेदानुकूल धर्म, वेद विरोधी धर्म तथा वेद को न मानने अथवा न जानने वालों के धर्म पर भी सतत दृष्टि रखनी पड़ेगी, तभी सम्यक् पाठनिर्धारण सम्भव होगा। सदाचार से प्रान्तभेद नहीं होता है बल्कि दूराचार से प्रान्तभेद होता है। उसके भीतर अन्तःसम्बन्ध स्थापित करने के लिये धर्मशास्त्र उपयोगी है। अतः सांस्कृतिक, सामाजिक तथा धार्मिक निदर्शन के लिये पाण्डुलिपियों का संग्रहण एवं सम्पादन आवश्यक है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र ने 'पाण्डुलिपियों के सम्पादन में आनेवाली समस्याएँ और उनके समाधान' विषय पर कहा कि भिन्न-भिन्न लिपियों के ज्ञान, भाषा-ज्ञान, विषय-ज्ञान तथा व्याकरण-ज्ञान से ही सम्पादन कार्य सटीक ढंग से किया जा सकता है। कार्यक्रम में श्री रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रो. शीतला प्रसाद उपाध्याय, प्रो. प्रद्युम्न सिंह शाह, प्रो. सदाशिव कुमार द्विवेदी, प्रो. मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. रजनीकान्त त्रिपाठी तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. नरेन्द्रदत्त तिवारी ने किया।

लोक ऋषि आचार्य पं. विद्यानिवास मिश्र पर स्मृति व्याख्यान

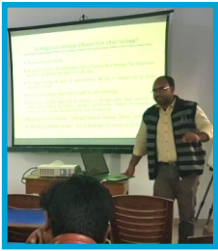
क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी ने पं. विद्यानिवास मिश्र की स्मृति में उनकी जन्मतिथि 14 जनवरी 2020 को एक व्याख्यान का आयोजन किया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता हिन्दी एवं भोजपुरी साहित्य के प्रसिद्ध गीतकार एवं लोककवि पं. हरिराम द्विवेदी ने "पूर्वाचल की लोकगीत परम्परा" विषय पर कहा कि लोक-साहित्य लोक की थाती है। उसकी सम्पदा पीढ़ियों से चली आ रही है। लोक परम्परा एक मजबूत कड़ी है। जिसे लोग अपनी पूर्व पीढ़ियों से प्राप्त करते हैं और अपनी अगली पीढ़ी को सौंप देते हैं।



अतिथिगणों द्वारा पं. विद्यानिवास मिश्र के जीवन पर आधारित लघु पुस्तिका का विमोचन

द्विवेदी जी के अनुसार लोकगीतों को चार भागों में विभाजित करके जाना जा सकता है— 1. भक्ति गीत 2. संस्कार गीत 3. ऋतु गीत एवं 4. अन्य (इसमें अनेकानेक धारार्यें सम्मिलित हैं जो स्वयं में बहुत विशाल हैं)। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि लोकगीतों को समझने के लिए लोक में रुचि होनी चाहिये। इसके अभाव में लोक रस का आनंद नहीं मिल सकता। आचार्य मिश्र, वेद एवं शास्त्रों को जितनी प्रतिष्ठा प्रदान करते थे उतनी ही लोक को भी। उन्होंने लोक एवं वेद को न केवल देखा और परखा था अपितु जिया था।

इस प्रकार पं. द्विवेदी ने 'राम की सुधि आई', 'के हो वन दिहले दूनो राजकुमार', 'अंगने में चिरइयाँ बोले', 'अमवा लगइह बाबा बारी बगइचा', 'निबिया लगइह दुआर' आदि प्रचलित लोकगीतों को गाकर आचार्य मिश्र के व्यक्तित्व से सम्बन्धित अनेक अनछुए पहलुओं को व्याख्यायित किया। आचार्य विद्यानिवास मिश्र लोक ऋषि थे एवं लोक—मर्यादा के उपासक थे।



Programs at Regional Centre Ranchi, IGNC

Aparna Jha

Course Coordinator, Regional Centre Ranchi, IGNC

Pilot Survey to explore "Jharkhand's indigenous art of Metal casting"

The Pilot survey was conducted in Karge village (which is in the outskirts of Ranchi) on 19th Feb. 2020 for a day to explore Jharkhand's indigenous art of Metal Casting.



Field visit by Dr. Giridhari Ram Gonjhou, Shri Mahadev Toppo and officials of RCR, Ranchi, IGNC

इस सम्पूर्ण सारस्वत सत्र की अध्यक्षता महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के पत्रकारिता एवं जनसम्पर्क विभाग के पूर्वाध्यक्ष प्रो. अर्जुन तिवारी ने की। प्रो. तिवारी ने अपने वक्तव्य में आचार्य मिश्र की उस शिष्य परम्परा का उल्लेख किया जो लगातार लोक और लोक संस्कृति को लेकर कुछ नया करने के लिये प्रयत्नशील है। उसी शृंखला में पं. हरिराम द्विवेदी और इनकी शिष्य परम्परा में श्री कैलाश गौतम जैसे अनेक लोककवि भी हैं।

अतिथियों का स्वागत तथा विषय प्रवर्तन क्षेत्रीय निदेशक प्रो. विजय शंकर शुक्ल ने किया तथा संचालन डॉ. रजनीकान्त त्रिपाठी तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. नरेन्द्रदत्त तिवारी ने किया। इस अवसर पर काशी के विद्वज्जन विशेष रूप से उल्लेखनीय प्रो. रेवाप्रसाद द्विवेदी, प्रो. मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी, प्रो. शीतला प्रसाद उपाध्याय, प्रो. चन्द्रभूषण झा, प्रो. भगवत् शरण शुक्ल, प्रो. सदाशिव कुमार द्विवेदी, डॉ. सुभाषचन्द्र यादव आदि अनेक विद्वान् उपस्थित थे।

The exploration was done under the guidance of Dr. Ajay K. Mishra (RD, RCR), Dr. Giridhari Ram Gonjhou (HoD, Tribal Regional Languages) and Shri Mahadev Toppo (Eminent Tribal expert) to study the thousand year old metal craft & casting traditions of Jharkhand. Dr. Prakash Tripathi (Research scholar, Janapada Sampada, IGNC) also accompanied the team during the Visit.

In the whole discourse on the indigenous metallurgical smelting Jharkhand carries a very rich legacy of craftsmanship especially in metal casting since time immemorial. Community of Asur, Lohar & Malar is quite known professionally for their indigenous expertise in smelting & casting of metals. Out of those few who have kept the tradition alive are the Malars who have been engaged in casting metals like copper, aluminum, alloy, bronze, brass, with a high level of indigenous technical excellence in metallurgy and casting.

This community is mostly known for a particular art work known as "Pāila" in the vernacular language of Jharkhand. Pāila refers to the hand-

casted metal object used to weigh grains/cereals much before the advent of weighing machines. Almost 20/25 families were dependent on this indigenous art for survival & sustenance. Due to poor market demand & insecure economic status many artificers were compelled to leave their indigenous expertise. However, it will not only re-instill a sense of pride among the artificers but also help nurture their aspirants which ultimately will result in preserving our unique cultural identity for the generations to come.

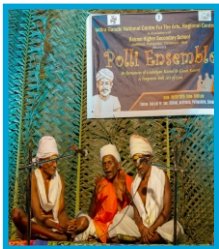
Lecture on 'Cultural Heritage of India in Tribal Context'

As part of monthly lecture series a lecture was organised in collaboration with Ranchi University on 28th Feb. 2020 delivered by Dr. Dipankar Chatterjee (Assistant Professor, Faculty of IRTDM, Shri RK Mission Vivekananda Educational & Research Institute, D.U.). The lecture session was chaired by Prof. Geeta Ojha (Coordinator, Dept. of Archaeology & Museology, Ranchi University). Dr. H.P. Sinha (Renowned Archaeologist of Jharkhand & former Deputy Director of Culture Department,

Govt. of Jharkhand) were also present during the lecture. Dr. Ajay K. Mishra, RD, RCR warmly welcomed the guests and gave a brief concept of the event.

Prof. Ojha emphasized on the necessity of reviving the cultural heritage of indigenous communities & reinvigorating the dying traditions associated with them. The Indian Cultural mosaic boasts of rich diversity consisting of approx. 705 notified tribal communities spread across the India.

Dr. Chatterjee presented an engaging discourse on various facets of cultural heritage & existing policy frameworks for the protection of these resources. He categorically defined the indigenous Culture & Heritage from various vantage points & typologies emphasizing on the imperative of safeguarding, preservation, dissemination in the highly modernized & industrialized world. He elaborately presented this from archaeological & anthropological perspective. This interactive lecture was discussed about various case studies pertaining to socio-religious dimension, technologies, vivid tribal festivals & lifestyles practiced among the indigenous communities.



Programs at Regional Centre Goa, IGNCA

Dr. Aruna Gajbhiye

Regional Director, Regional Centre Goa, IGNCA

Polli Ensemble: A forgotten folk-art of Goa

Polli Ensemble was organized in association with Balram Hr. Sec. School, Ardhfond, Canacona Goa on 20th Jan. 2020, with the objective to revive "Gaun Kanni" & "Gudulyan Gaani" the forgotten folk storytelling form of Canacona, which is on its verge of extinction. It was inaugurated with traditional Polli Fire by special guest Hon'ble Cultural Minister, Govt of Goa, Shri Govind Gaude. Folk art researcher Shri Kamlakar Mhalshi was speaker & curator of the Program. While addressing Shri Govind Gaude said Modernization & Urbanization is playing great



Dr. Aruna Gajbhiye presenting Charkha to Shri Govind Gaude, Cultural Minister of Goa

role to keep us depart, but folk art is keeping communities united, Goa is identify with its folk

culture and we all need to try our best to keep it alive. During the inauguration of Polli Ensemble he appreciated the efforts of RCG, IGNC A to revive this forgotten folk art-form. He also encouraged the artists by his presence during the performance.

The Gudulya Gaani and Gaun Kanni were performed by the artists in which Mahabahrata story was the core area and artists narrated the lesson's needs to be taken by the society so not to repeat the Mahabharata. According to them Bhim was the only Pandav who needs to be followed and worshipped. The performance was followed by the explanations of Shri Mhalshi with PPT presentation. Shri Mhalshi while expressing his concern on this occasion said all folk dance & art forms in Goa are facing pressures of globalization. With the increasing urbanization & changing lifestyle of rural people & the traditional art forms are not getting sufficient audience. The next generation is not interested to continue this due to financial viability.

Guest of Honor Shri Sudesh Naik, Headmaster of Govt. School Sadolxem also spoke on the importance of the performances of Folk art form. Initially Dr. Aruna Gajbhiye RD, RC Goa welcomed the guests with wooden miniature of Charkha and Shri Ketan Jadhav proposed vote of thanks.

Peer Paraye Jaane Re, A Talk on Gandhiji's philosophy and "Nayi Talim"

"Peer Parayi Jaane Re" was the topic of the talk delivered by Special Guest Shri Lokendra Bharatiya in continuation of the 150th Gandhi celebration. 120 participants attended this talk on Gandhiji's philosophy and "Nayi Talim" as a way of living life to improve empathetic attitude. Shri Lokendra insisted on the current education policy its limitation and failure to inculcate life skills among the literate class. He further said Nayi Talim is the only systematic teaching learning practice which can bring the values of harmony and peace through education. Today's literate population is hardly educated enough to survive on their own. Empathy is a basic skill and value to understand others point of view which was the foremost principal in Gandhiji's teachings. Dr. Aruna Gajbhiye, RD-Goa welcomed all the guests, participants and presented a wooden miniature of Charkha. Principal Dr. Alan Abruea also expressed views on Gandhiji.

All the staff of GVMS college had participated in this talk. Comparing was done by Assistant Prof. Ms. P. Kavlekar & vote of thanks by Project Associate Shri Ketan Jadhav.



Programs at Regional Centre Thrissur, IGNC A

Dr. Sajith E. N.

Regional Director, Regional Centre Thrissur, IGNC A

1. 173rd Thyagaraja Aradhana

As part of 173rd Thyagaraja Aradhana Regional Centre, Thrissur, IGNC A in association with Chembai Memorial Govt. Music College (CMGMC), had organised Thyagaraja Aradhanai at CMGMC on January 6, 2020.

Thyagaraja Aradhanai is conducted all over the world every year to do obeisance to the revered composer of Carnatic Music Saint Thyagaraja. His compositions have stressed the need to follow



Dr. Hari Sundar Govindaraman speaking during the program

'Sanmarga' the righteous path one should live. Highlighting the aspect of 'Sanmarga', a talk 'Humanity as envisaged in the compositions of Saint Thyagaraja' was delivered by Dr. Hari Sundar Govindaraman (Associate Prof. & Programme Director, Chinmaya Viswavidyapeeth University, Piravom). Dr. Harisundar Govinda Raman, narrated the human values depicted in various compositions of Saint Thyagaraja. He also stressed the need for musicians to understand the meaning of compositions to bring out the full beauty of a compositions and better comprehension by the audience. The talk was followed by a Music Concert by Nedumkunnam, Dr. Sreedev Rajagopal (HoD, Dept. of Vocal Music, RLV College of Music & Fine Arts, Thrippunithura, Ernakulam), comprising the compositions of Saint Thyagaraja. 'Upacharamulanu', Thyagaraja's composition in the Raga Bhairavi set to AdiTala was the main item of the concert. Dr. N. Sampath Narayanan, Shri Kallekkulangara Unnikrishnan and Shri Elamkulam Deepu accompanied on Violin, Mridangam and Ghatam respectively. Shri S. Dinesh, Principal, CMGMC, Palakkad felicitated the artists.

2. Republic Day Celebrations

To celebrate the 71st Republic Day of India IGNCA Thrissur in association with St. Mary's College organized an Inter-University Quiz competition on 'Constitution of India', on 23rd Jan. 2020. Total 47 teams of two contestants each, from different

universities in Kerala, had participated in the preliminary round and 5 teams reached the finals.

3. 550th Birth Anniversary Celebration of Shri Guru Nanak Dev Ji

Prizes were distributed to the winners of Quiz and Essay Writing competition held on 12.12.2019 in connection with 550th Birth Anniversary of Sri Guru Nanak Dev Ji held on 18th Feb. 2020 at Kendriya Vidyalaya, Puranattukara.

4. National Science Day

On the occasion of National Science Day, Regional Centre, Thrissur, IGNCA in association with the Dept. of Chemistry, Kannur University, conducted a talk titled '**Beauty in Science and Arts**'. The Talk was delivered by Prof. V. P. N. Nampoori (Emeritus Professor, International School of Photonics, Cochin University of Science and Technology, Cochin) on 28th February 2020. Prof. V.P.N. Nampoori in his talk, highlighted the concept of 'Symmetry' in science and arts by drawing examples from different fields of science and art, including Physics, Architecture, Painting, Music and Poetry. The perception of symmetry in Van Gogh's renowned painting 'Sun flowers' and Murray-Gell-Mann's concept of quarks were the main themes of his talk. Prof. V.P.N. Nampoori concluded the speech stating symmetry is the vital element of beauty in every field like Architecture, Literature and others.

Events/Book Release organized by Kala Nidhi Division, IGNCA



A seven day Residential Seminar on "Happiness and Good Life: Philosophical Reflections through Cultures" was organized during Jan. 6-12, 2020 by Kamala Nehru College and Dept. of Philosophy, University of Delhi in association with Council for Research in Values and Philosophy, USA, ICPR, IGNCA and DELNET. One day session was held at IGNCA on 10th January. Speakers of the inaugural session included Prof. R.C. Sinha, Chairperson ICPR; Dr. Kalpana Bhakuni, Principal, Kamala Nehru College; Dr Hu Yeping, Director, CRVP; Dr. Joao J Villa-Cha, Pountiffical Georgian University, Italy; Dr. Balaganapati, Head Department of Philosophy, DU and Dr. Geetesh Nirban, Convener

of the Seminar and Assistant Professor, Department of Philosophy, Kamala Nehru College. Participants from seven countries attended this unique seminar and shared cross-cultural experiences and ideas on happiness and good Life.



A discussion session on the book "Our Constitution: Expressions and Drawings" authored by Shri Laxminarayan Bhala was organized on 14th Jan. 2020. Mr. Subhash C. Kashyap, former General Secretary, Lok Sabha was present as the Chief Guest. The session was presided by the President of the IGNCATrust, Shri Ram Bahadur Rai Ji. MS, IGNCATrust; Mr. Alok Kumar, Senior Advocate and social worker as Special Guest and Prof. Raj Kumar Phalwaria were also present in the program.



Kala Nidhi, IGNCATrust in collaboration with Author Cafe organised one day Seminar title ETD Life Cycle Management on 30th Jan. 2020. It was inaugurated by Dr. Sachchidanand Joshi MS, IGNCATrust, Prof. J P Singh Joorel, Director INFLIBNET, Prof. Ram Ramaswamy Ex. VC, University of Hyderabad and representatives of Author Cafe.



The occasion of Annual Day Celebrations of Kala Nidhi Division, IGNCATrust a Book Launch and Discussion was organized on the Book "अंतहीन यात्रा खेल पत्रकारिता और मैं" by Padampati Sharma on 3rd Feb. 2020. The discussions were chaired by Shri Ram Bahadur Rai, President, IGNCATrust. Eminent Journalist Shri Achyutanand Mishra, Ex. VC, Makhan Lala Chaturvedi Rashtriya Patrakarita Vishwavidyalaya, Bhopal was the Chief Guest. Shri Mukand Lal Tandon, Samajvadi, Varanasi; Prof. Ram Mohan Pathak, VC, Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha, Chennai were the other speakers. Prof. Ramesh C. Gaur, Dean and HoD (KN) moderated the discussions.



On the occasion of the World Radio Day on 13th Feb. 2020, the Kala Nidhi Division of the IGNCATrust, in collaboration with the UNESCO, Delhi Office and SMART, New Delhi, had hosted the Radio Festival 2020 at the IGNCATrust during 13-14 Feb. 2020. The Festival was inaugurated in the presence of eminent guests, Mr. Sashi S. Vempati, CEO, Prasar Bharati and DG, AIR; Mr. Eric Falt, Director, UNESCO, Delhi Office; Mr. Atul K Tiwari, Additional Secretary, Ministry of Information & Broadcasting; Prof. Ramesh C. Gaur and Ms. Archana Kapoor, Founder, Radio Day Festival & Chairperson, SMART, Delhi. More than 700 participants attended the program from all over India.



Retired Officers & Staff

Mr. Tejpall Pathak

Head Draftsman, IGNCATrust, New Delhi



Dignitaries during the Book discussion on "Our Constitution: Expressions & Drawings" authored by Sh. Laxminarayan Bhala



Dr. Sachchidanand Joshi felicitating Dr. Lokesh Chandra in presence of Shri Ram Bahadur Rai on the Foundation Day of NMM



Padma Shri V.K. Munusamy explaining the Terracotta Art at IGNCA Regional Centre, Puducherry



Experts explaining exhibits to the Participants in Iranian Arts Exhibition at IGNCA



इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

Printed and Published by
Member Secretary, IGNCA
on behalf of

Indira Gandhi National Centre for the Arts,
11 Mansingh Road, New Delhi 110001

Please Contact : Vihangama:igncavihangama@gmail.com



ignca.gov.in



outreach.ignca@gmail.com



IGNCA



ignca_delhi



ignca_delhi



9599443393